॥ॐ॥

॥ॐ श्री परमात्मने नमः ॥

॥श्री गणेशाय नमः॥

वैदिक सूक्ति सुधा

विषय-सूची

ऋग्वेद सूक्तिसुधा..... 3
यजुर्वेदीय सूक्ति सुधा..... 6
सामवेदीय सूक्ति सुधा..... 8
अथर्ववेदीय सूक्ति सुधा.....10

ऋग्वेद सूक्तिसुधा

१. **न स सखा यो न ददाति सख्ये। (१० । ११७ । ४)**

'वह मित्र ही क्या, जो अपने मित्रको सहायता नहीं देता।'

२. **सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन् । (९।७३ । १)**

'धर्मात्माको सत्यकी नाव पार लगाती हैं।

३. **स्वस्ति पन्थामनु चरेम। (५। ५१ । १५)**

'हे प्रभो! हम कल्याण-मार्गके पथिक बनें ।'

४. **अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव। (१। ९४।४)**

'परमेश्वर! हम तेरे मित्रभावमें दुःखी और विनष्ट न हों।

५. **शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः॥ (१०।१८।२)**

'शुद्ध और पवित्र बनो तथा परोपकारमय जीवनवाले हो।'

६. **सत्यमूचुर्नर एवा हि चक्रुः। (४।३३।६)**

'पुरुषों ने सत्यका ही प्रतिपादन किया है और वैसा ही आचरण किया है।'

७. **सुगा ऋतस्य पन्थाः ।। (८।३१ । १३)**

'सत्य का मार्ग सुख से गमन करनेयोग्य हैं, सरल है।

८. **ऋतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः ॥ (९ । ७३ । ६)**

'सत्य के मार्ग को दुष्कर्मी पार नहीं कर पाते।

९. **दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते। (१ । १२५ । ६)**

'दानी अमरपद प्राप्त करते हैं।'

१०. **समाना हृदयानि वः। (१०। १९१ । ४)**

'तुम्हारे हृदय (मन) एक-से हों।

११. **सरस्वती देवयन्तो हवन्ते। (१०। १७ । ७)**

'देवपद के अभिलाषी सरस्वती का आह्वान करते हैं।'

१२. **उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः। (१०।१०१।१)**

एक विचार और एक प्रकारके ज्ञान से युक्त मित्र जनो उठो! जागो!!'

१३. **इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति। (८।२।१८)**

'देवता यज्ञकर्ता, पुरुषार्थी तथा भक्तको चाहते हैं, आलसीसे प्रेम नहीं करते।

१४. **यच्छा नः शर्म सप्रथः ॥ (१। २२ । १५)**

'भगवन्! तुम हमें अनन्त अखण्डैकर सपरिपूर्ण सुखों को प्रदान करो।'

१५. **सुम्नमस्मे ते अस्तु। (१ । ११४॥ १०)**

'हे परमात्मन् ! हमारे अंदर तुम्हारा महान् (कल्याणकारी) सुख प्रकट हो।'

१६. **अस्य प्रियासः सख्ये स्याम। (४। १७।९)**

'हम देवताओं से प्रीति युक्त मैत्री करें।'

१७. **पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ॥ (५ । ५१ । १५)**

'हम दानशील पुरुष से, विश्वासघात आदि न करने वाले से और विवेक-विचार ज्ञान वान से सत्संग करते रहें।

१८. जीवा ज्योतिरशीमहि ।। (७।३२ । २६)

'हम जीवगण प्रभुकी कल्याणमयी ज्योतिको प्रतिदिन प्राप्त करें।

१९. भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम्। (१० । २५ । १)

'हे परमेश्वर ! हम सबको कल्याणकारक मन, कल्याणकारक बल और कल्याणकारक कर्म प्रदान करो।'

यजुर्वेदीय सूक्ति सुधा

१. **तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा। (३१ । १९)**

'उस परमात्मामें ही सम्पूर्ण लोक स्थित हैं।'

२. **अस्माकथं सन्त्वाशिषः सत्याः। (२ । १०)**

'हमारी कामनाएँ सच्ची हों।'

३. **भूत्यै जागरणमभूत्यै स्वपनम्। (३० | १७)**

'जागना (ज्ञान) ऐश्वर्यप्रद है। सोना (आलस्य) दरिद्रता का मूल हैं।'

४. **सं ज्योतिषाभूम।। (२। २५)**

'हम ब्रह्मज्ञानसे संयुक्त हों।'

५. **अगन्म ज्योतिरमृता अभूम। (८।५२)**

'हम तुम्हारी ज्योतिको प्राप्तकर मृत्युके भयसे मुक्त हों।'

६. **वैश्वानरज्योतिर्भूयासम् । (२० । २३)**

'मैं परमात्मा की महिमा मयी ज्योति को प्राप्त करूं।'

७. **सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः। (२०। ५१)**

'सर्वज्ञ प्रभु हमारे लिये सुखकारी हों।'

८. **अप नः शोशुचदधम्।। (३५। ६)**

'देवगण हमारे पापोंको भलीभाँति नष्ट कर दें।

९. **स्योना पृथिवि नः। (३५ । २१)**

"हे पृथिवी ! तुम हमारे लिये सुख देनेवाली हो ।'

१०. **इहैव रातयः सन्तु ॥ (३८ । १३)**

हमें अपने ही स्थानमें अनेक प्रकारके ऐश्वर्य प्राप्त हों ।'

११. **ब्रह्मणस्तन्वं पाहि। (३८। १९) ।**

"हे भगवन्! तुम ब्राह्मणके शरीरका पालन (रक्षण) करो।

सामवेदीय सूक्ति सुधा

१. **भद्रा उत प्रशस्तयः । (१११)**

'हमें कल्याणकारिणी स्तुतियाँ प्राप्त हों।''

२. **वि रक्षो वि मृधो जहि। (१८६७) ।**

'राक्षसों और हिंसक शत्रुओंका नाश करो।

३. **जीवा ज्योतिरशीमहि। (२५९)**

'हम शरीरधारी प्राणी विशिष्ट ज्योतिको प्राप्त करें।'

४. **नः सन्तु सनिघन्तु नो धियः ।। (५५५)**

'हमारी देवविषयक स्तुतियाँ देवताओंको प्राप्त हों।

५. **विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञम्। (६१०)**

'सम्पूर्ण देवगण मेरे मान करनेयोग्य पूजनको स्वीकार करें।'

६. **अहं प्रवदिता स्याम्॥ (६११)**

'मैं सर्वत्र प्रगल्भतासे बोलनेवाला बनूं।'

७. **यः सपर्यति तस्य प्रावित भव। (८४५)**

'जो तेरी पूजा करता है, उसका तू रक्षक हो।'

८. **मनौ अधि पवमानः राजा मेधाभिः अन्तरिक्षेण यातवे ईयते। (८३३)**

'मनुष्यों में शुद्ध होनेवाला अपनी बुद्धि से उच्च मार्ग से जाने की कोशिश करता है।

९. **जनाय उर्ज वरिवः कृधि। (८४२)**

'लोगों में श्रेष्ठ बल पैदा करो।'

१०. **पुरन्धिं जनय। (८६१) ।**

'बहुतसे उत्तम कर्म करनेमें समर्थ बुद्धिको उत्पन्न करो।'

११. **विचर्षणिः, अभिष्टिकृत्, इन्द्रियं हिन्वानः, ज्यायः, महित्वं आनशे। (८३९)**

विशेष ज्ञानी और इष्ट की सिद्धि करने वाला अपनी शक्ति को प्रयोग में लाकर श्रेष्ठत्व प्राप्त करता है।'

१२. **ऋतावृधौ ऋतस्पशौ बृहन्तं क्रतुं ऋर्तन आशाथे। (८४८)**

'सत्य बढ़ानेवाले, सत्यको स्पर्श करनेवाले सत्यसे ही महान् कार्य करते हैं।'

१३. **यः सखा सुशेवः अद्वयुः। (६४९)**

'जो उत्तम मित्र, उत्तम प्रकार से सेवा के योग्य तथा अच्छा व्यवहार करनेवाला है, वह उत्तम होता है।'

१४. **ईडेन्यः नमस्यः तमांसि तिरः दर्शतः वृषा. अग्निः सं इध्यते। (१५३८)**

'जो प्रशंसनीय, नमस्कार करनेयोग्य, अन्धकारको दूर करने वाला दर्शनीय और बलवान् है; उसका तेज बढ़ता है।

अथर्ववेदीय सूक्ति सुधा

१. **स एष एक एकवृदेक एव। (१३।५। २०)**

'वह ईश्वर एक और सचमुच एक ही है।'

२. **एक एव नमस्य विक्ष्वीड्यः। (२।२।१)**

'एक परमेश्वर ही पूजा के योग्य और प्रजाओं में स्तुत्य है।

३. **तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्योः। (१०।८।४४)**

'उस आत्माको ही जान लेने पर मनुष्य मृत्युसे नहीं डरता।'

४. **रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्याः पापीस्ता अनीनशम्॥ (७।११५ । ४)**

'पुण्य की कमाई मेरे घर की शोभा बढ़ाये, पाप की कमाई को मैंने नष्ट कर दिया है।

५. **मा जीवेभ्यः प्र मदः। (८।१।७)**

'प्राणियों की ओरसे बेपरवाह मत हो।'

६. **वयं सर्वेषु यशसः स्याम।। (६।५८ । २)**

'हम समस्त जीवों में यशस्वी होवें।'

७. **उद्यानं ते पुरुष नावयानम्। (८।१।६)**

'पुरुष! तुम्हें तेरे लिये ऊपर उठना चाहिये, न कि नीचे गिरना।'

८. **मा नो द्विक्षत कश्चन। (१२।१। २४)**

'हमसे कोई भी द्वेष करनेवाला न हो।'

९. **सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचे वदत भद्रया॥ (३। ३० । ३)**

'समान गति, समान कर्म, समान ज्ञान और समान नियमवाले बनकर परस्पर कल्याणयुक्त वाणी से बोलो।'

१०. **मा मा प्रापत् पाप्मा मोत मृत्युः। (१७ । १। २९)**
'मुझे पाप और मौत न व्यापे।'

११ **अभि वर्धतां पयसाभि राष्ट्रेण वर्धताम्। (६ । ७८ । २)**

मनुष्य दुग्धादि पदार्थोंसे बढ़े और राज्यसे बढ़े।

१२. **अरिष्टाः स्याम तन्वा सुवीराः ।। (५। ३ । ५)**

'हम शरीरसे नीरोग हों और उत्तम वीर बनें ।'

१३. **सर्वान् पथो अनृणा आ क्षियेम॥ (६। ११७॥ ३)**

'हम लोग ऋणरहित होकर परलोक के सभी मार्गों पर चलें ।'

१४. **वाचा वदामि मधुमद् (१। ३४। ३)**

'वाणी से माधुर्ययुक्त ही बोलूं।

१५. **ज्योगेव दृशेम सूर्यम्॥ (१ । ३१ । ४)**

हम सूर्य को बहुत काल तक देखते रहें।'

१६. **मा पुरा जरसो मृथाः ।। (५ । ३० । १७)**

'हे मनुष्य! तू बुढ़ापे से पहले मत मर ।'

१७. **शतहस्त समाहर सहस्रहस्त से किर। (३।२४।५)**

'सैकड़ों हाथों से इकट्ठा करो और हजारों हाथोंसे बाँटो।

१८. शिवं मह्यं मधुमदस्त्वन्नम्॥ (६ । ७१ । ३)

'मेरे लिये अन्न कल्याणकारी और स्वादिष्ट हो।'

१९. शिवा नः सन्तु वार्षिकीः ।। (१।६।४)

'हमें वर्षा द्वारा प्राप्त जल सुख दे।'

२०. पितेव पुत्रानभि रक्षतादिमम् ॥ (२ । १३ । १)

'हे भगवन् ! जिस प्रकार पिता अपने अपराधी पुत्रको रक्षा करता है, उसी प्रकार आप भी इस (हमारे) बालक की रक्षा करें।

२१. विश्वकर्मन् नमस्ते पाह्यस्मान्। (२॥ ३५ ॥४)

'हे विश्वकर्मन्! तुमको नमस्कार है, तुम हमारी रक्षा करो।'

२२. शतं जीवेम शरदः सर्ववीराः॥ (३।१२।६)

'हुम स्वभिलषित पुत्र-पौत्रादिसे परिपूर्ण होकर सौ वर्षतक जीवित रहें।

२३. निरर्मण्य ऊर्जा मधुमती वाक् ॥ (१६। २ । १)

'हमारी शक्तिशालिनी मीठी वाणी कभी भी दुष्ट स्वभाव वाली न हो।'

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।